ख़ुदारा! ख़ुदारा! मेरे नौजवान दोस्तों अपनी जवानियों को दीन की राह पर ले आओ और अल्लाह से सच्चे दिल से तौबा करलो और तमाम बुराइयों को अपने से अलग करके मुस्लिम उम्मत के लिए कुछ कीजिये क़ौम की बेटियों की हिफ़ाज़त कीजिये
आज हमारी क़ौम की माँ बहने जब भीख मांगती दिखाई देती हैं तो कलेजा मुँह को आता है और दिल सोचने पर मजबूर हो जाता है के जिस क़ौम के पास ज़कात जैसी मुक़द्दस चीज़ मौजूद है उस क़ौम की औरतें भीख मांग रही हैं ऐसा क्यों है? ये हमारा सवाल है, अल्लाह चाहता तो हम लोगो को भी भिखारी बना सकता था लेकिन तुम्हें अमीर बनाया तो तुम उसका हुक्म भूल गए और फ़िज़ूलख़र्ची में पैसा उढ़ाते चले गए और दुनिया के नशे में चूर हो गए कब तक नशे में चूर रहोगे साहिब।

एक ऐसा वक़्त आने वाला है जब दोनों अंगूठे बांध दिए जायेंगे जब नाक में रुई ठूंस दी जाएगी जब चिट्टे लिबास में कफ़न दिया जायेगा ये महल ये कोठियां ये बंगले जिसको अपनी दौलत से तूने हलाल हराम की तमीज किए बिना बनाया था लोग तो तुझे उसमे एक रात भी नहीं रखेंगे आज तू मिनिस्टर है आज तू अल्लामा है आज तू पहलवान है आज तू अमीर है आज तू शहज़ादा है आज तू अपने ऊपर एक चुटकी धुल भी पढ़ना गवारा नहीं करता है लेकिन कल तेरा कफ़न भी तार तार हो जायेगा ।

वालिदैन से भी गुज़ारिश है के अपने बच्चो की खल्वतो पर नज़र रखें के कहीं हमारा बच्चा सोशल मीडिया पर गलाज़त और ज़िना के मनाज़िर तो नहीं देख रहा है आज के दौर का सबसे बड़ा फितना सोशल मीडिया है इससे नोजवानो की निगाहें पाक नहीं रहीं और उस की वजह से दिल भी गंदे हो जाते हैं आज हर कोई नेट के पैकेज लेकर आ रहा है और इसके ज़रिये तुम्हारी जवानियों को बर्बाद करना चाहता है उसका मक़सद है के मुसलमानों के अंदर से अल्लाह को खौफ और इश्क़ ए मुस्तफा अलेह सलाम निकाल दो बस ये क़ौम जवान मर्दियों से नामर्दियों की तरफ पलट जाएगी और ये हमेशा याद रखना इससे गैर मज़ाहिब के लोगो पर कोई असर नहीं पड़ेगा उनके लिए तो दुनिया ही जन्नत है असल इम्तेहान सिर्फ और सिर्फ मुसलमानो का है अब देखना ये है इस इम्तेहान में पास कौन होता है जो पास हो गया उसके लिए जन्नत की बहारें हैं और जो फ़ैल हुआ उसके लिए जहन्नुम की आग और रुस्वाई ही रुस्वाई है ।
बस ये दर्द भरा पैगाम आपके नाम था अब आपको सोचना है के आप मुस्लिम उम्मत के लिए क्या करते हैं कुछ बातें हम भी अर्ज़ करते हैं ।
पहली बात तुम्हारे पास ईमान सबसे बड़ी दौलत है इससे बढ़कर कोई दौलत नहीं इसे किसी की चाय की प्याली पर बेच न देना ।
अपने घर का माहौल दीनी बनाओ अपने बच्चों को क़ुरान पढ़ाओ और हुज़ूर अलेह सलाम की सीरत पढ़ाओ जिससे उसके दिल में हुज़ूर अलेह सलाम की मुहब्बत पैदा हो और दीनी मजालिस में अपने बच्चों को लेकर जाओ ।
दूसरी बात ये के अपने घरो में, मस्जिदों में दरस ए क़ुरान, नमाज़ ,तहारत ,और तमाम ज़रूरियात ए दीन के मसाइल के लिए दीनी मजालिस का इनकाद करें ।
आखिरी बात ये के गरीब लोगो के मदद के लिए हर तरीके से हर वक़्त हाज़िर रहे और एक कमिटी बनाकर उसके ज़रिये से गरीब लोगो की मदद की जाये और जहा तक हो सके लोगो की मुश्किलें दूर की जाएँ ।
मुझे उम्मीद है आप ज़रूर ये पढ़कर मैदान ए अमल में आएंगे और उम्मत की सरफ़राज़ी के लिए कुछ करेंगे ।

"अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नुम भी
ये खाकी अपनी फितरत में न नूरी है न नारी है"

मुसलमान परेशान क्यों ?

नाशिर

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

tehreeknizamemustafa@gmail.com

आज कौन सा दर्द रखने वाला दिल है जो मुसलमानों की मौजूदा ज़िल्लत ख्वारी और नादारी पर न दुखता हो और कौन सी आँख है जो उनकी गुरबत मुफलिसी,बेरोज़गारी पर आंसू न बहाती हो।हुकूमत उन से छिनी,दौलत से महरूम हुए,इज़्ज़त व वक़ार उन का ख़त्म हो चुका,ज़माने की हर मुसीबत का शिकार मुसलमान बन रहे हैं और तो और अब तो उनकी मुल्क़ी मुहब्बत में भी शक समझा जा रहा है इन हालात को देखकर कलेजा मुँह को आता है |

मगर दोस्तों फ़क़त रोने,दिल दुखाने और सोशल मीडिया पर अपना दर्द सुनाने से काम नहीं चल सकता बल्कि ज़रूरी है के इसके इलाज पर खुद मुसलमान क़ौम गौर करे । पहला ये के अस्ल बीमारी क्या है, दूसरा ये के उस बीमारी की वजह क्या है, और तीसरा ये के उसका इलाज क्या है।

मुसलमानो की अस्ल बीमारी तो शरीअत ए मुस्तफा सल्लल्लाहु अलेह वसल्लम को छोड़ना है , हम ने शरीअत ए मुस्तफा की पैरवी छोड़ दी हमारी ज़िन्दगी इस्लामी न रही ,हमे खुदा का खौफ ,नबी का शर्म ,आख़िरत का डर न रहा।मस्जिदें हमारी वीरान, मुसलमानो से सिनेमा व तमाशे आवाद, वैलेंटाइन डे , न्यू ईयर नाईट ,क्रिसमस डे के नाम पर बेहयाई गुंडागिर्दी हम में मौजूद, गैर मज़हबी रस्में हम में मौजूद तो फिर हम किस तरह इज़्ज़त पा सकते हैं

"सुन्नत ए मुस्तफा को छोड़ना है वजह ए बर्बादी

इसी से क़ौम दुनिया में हुई बे इक़्तेदार अपनी"

शरीअत ए मुस्तफा को छोड़ने की वजह से मुसलमानो में बहुत सी बीमारिया पैदा हो गयीं पहली ये के रोज़ाना नए नए मज़हबो की पैदावार और हर आवाज़ पर मुसलमानो को आँख बंद करके चल पड़ना ,दूसरा ये के मुसलमानो की खाना जंगिया और मुक़दमा वाज़ियाँ और आपस की अदावतें , तीसरा हमारे बाप दादाओं की ईजाद की हुई खिलाफ ए शरा या फुज़ूल रस्में ।इन तीनो क़िस्मों की बीमारियों ने मुसलमानों को ज़लील व ख्वार करके रख दिया है

मुसलमानो एक बात खूब याद रखो के कपड़ा नया पहनो,मकान नया बनाओ ,ग़िज़ाएं नयी नयी खाओ हर दुनयावी काम नए नए करो मगर दीन वही 1400 साल वाला पुराना इख़्तियार करो और इसके लिए परहेज़ यही है के हर बदमज़हब की सोहबत से बचो उस मौलवी के पास बैठो जिस के पास बैठने से हुज़ूर अलेह सलाम का इश्क़ और शरीयत पर अमल करने का जज़्बा पैदा हो और दूसरी बात ये के अक्सर फितना फसाद की जड़ दो चीज़ें हैं, एक गुस्सा और अपनी बढ़ाई ,दूसरी हुक़ूक़ शरिया से गफलत ।हर शख्स चाहता है के मैं सब से ऊँचा हूँ और सब मेरे हुक़ूक़ अदा करें मगर मैं किसी का हक़ अदा न करूं।अगर हमारी तबियत में से खुदी,गुरूर ,घमंड ,रियाकारी निकल जाये और आजिज़ी पैदा हो जाये तो एक इन्क़िलाब पैदा हो सकता है और जंग व जिदाल और मुक़दमों से बहुत आसानी से छुटकारा पाया जा सकता है

मुसलमानों को बर्बाद करने वाले असबाब में से सबसे बड़ा सबब उन के नौजवानों की बेकारी और बच्चो की आवारगी है माँ और बाप की तरबियत न मिलने की वजह से वही नौजवान मुसलमानों का नाम बदनाम करते हैं जो गलत कामों में मुलब्बिस हो जाते हैं वो या तो चोर बन जाते हैं या चौराहों पर खड़े होकर बदमाशी ,गुंडागिर्दी करते दिखाई देते हैं ,और गैर मैहरम औरतों और खासकर अपनी मुस्लिम बहनों पर बद नज़री करते दिखाई देते हैं या फिर जुवा, शराब ,ज़िना, और तमाम तरह के ऐबों में ग़र्क़ हो जाते हैं नौजवानों! तुमने सारी सारी रातें सोशल मीडिया पर गलाज़त देखकर गुज़ार दी लेकिन तुम्हे उन माँ बहन बेटियों का ख्याल नहीं आया जो हिन्दुस्तान ,फिलिस्तीन , बर्मा, कश्मीर ,इराक़, सीरिया में दरगोर कर दी गई क्या वो मुसलमान नहीं थीं ? चलो मान लिया जाये के मुलकी कानून को देखते हुए तुम वहाँ पहुंचकर उनकी मदद नहीं कर सकते थे लेकिन क्या पांच वक़्त की नमाज़ पढ़कर उनके लिए दुआ भी नहीं कर सकते थे। और एक बात याद रखो अगर तुम किसी की बेटी ,बहन ,माँ पर बद नज़री करोगे तो कल तुम्हारा घर भी महफ़ूज़ नही रह सकेगा चाहें कितनी ऊँची दीवारें क्यों न कर लेना।

मुसलमान नौजवानों! तुम्हें तो क़ौम की बेटियों की इज़्ज़त व आबरू के पहरेदार की हैसियत से दुनिया में पैदा क्या गया था अफ़सोस ! तुम खुद ही क़ौम की बेटियों पर ज़ालिम बन गए सारी सारी रात तुमने गैर महरम लड़कियों से फ़ोन पे बात करने में गुज़ार दी, किसने इजाज़त दे दी थी तुम्हें ये करने की बताओ तुम्हारे पास कुछ जवाब न होगा लेकिन आज हम पूछ रहे हैं हमें दर गुज़र कर सकते हो, लेकिन कल क़यामत के दिन जब खुदा तुमसे पूछेगा के जवानी कहा गुज़ारी? तो क्या जवाब दोगे? अगर कल जवाब नहीं दिया तो जहन्नुम की आग में डाल दिए जाओगे वो जहन्नुम जिसको अगर एक सुई के सुराख के बराबर भी खोल दिया जाये तो सारी दुनिया जल कर खाक हो जाये

यही वो बदआमालियाँ हैं जिनकी सज़ाएं हमको मिल रही हैं हम कदम कदम पर परेशान नज़र आ रहे हैं इन सब की वजह हमारी क़ौम के नौजवानो का तालीम व तहज़ीब से दूर होना है आज हमने दीनी तालीम को पसे पुश्त डाल दिया है आज जिन हाथों में क़लम होना चाहिए था उनमें औज़ार दिखाई दे रहे हैं । अगर हम दीनी तालीम को गले से लगाकर अमल के मैदान में उतरते तो आज बेहयाई, गुंडागिर्दी और तमाम तरह की बुराइयों का खात्मा हो गया होता और हमारे क़ौम की बेटियां गैर मज़हब के लड़को के साथ पार्कों बाज़ारों में न दिखाई देती लेकिन अफ़सोस आज हम खुद उन गलीज़ कामो में मुलब्बिस हैं ।

अगर हम बचपन से लेकर अब तक अपनी ज़िन्दगियों में देखें अपनी बस्तियों में अपने इलाक़ो में अपने शहरों में कितने कितने सरकश लोग होते थे आज उनका नाम व निशान भी नहीं है आज भी नाम नेकोकारों का है असल जिनगी आख़िरत की ज़िन्दगी है ये दुनिया एक ख्वाब है जो टूटकर बिखर जायेगा हम इस मुख़्तसर ज़िन्दगी को कैसे गुज़रते हैं आपके हाथ में फैसला दिया गया है अल्लाह ने कोई अम्र छुपा कर नहीं रखा हर चीज़ खोल के बयां कर दी , ये ज़िन्दगी है , ये आख़िरत है सब कुछ बताया अंबिया भेजे, रसूल भेजे, पैगम्बर भेजे,किताबें नाज़िल की, सालेहीन भेजे , डूबता सूरज रोज़ कहानी बयां करता है ये क़ायनात हमारे लिए बहुत बड़ी इबरत है हमसे पहले लोग चले गए हमारी मौजूदगी में चले गए हमसे बड़े चले गए हमारी उम्र के चले गए हम से छोटे चले गए क़ब्रिस्तान आँखों के सामने है ये रोज़ जनाज़े उठते हमें दिखाई देते हैं ,इतना कुछ होने के बावजूद फिर भी आँखे मूँद के ज़िन्दगी गुज़ार रहे हो तो इससे बड़ी बदबख्ती और क्या हो सकती है

"अँधेरा घर अकेली जान दम घुटता दिल उकताता

खुदा को याद कर प्यारे वो साअत आने वाली है"

अभी तौबा का दरवाज़ा बंद नहीं हुआ सूरज मगरिब से तुलूअ नहीं हुआ अल्लाह की रहमत का दर खुला हुआ है आज आ जाओगे तो पिछले सारे गुनेह माफ़ कर दिए जायेंगे , नहीं आओगे तो वो बेनियाज़ है उसको कोई परवाह नहीं है आज उसने तुम्हे मोहलत भी दी है आज उसने तुम्हे वक़्त भी दिया है हो सकता है देर तक तुम्हे मौत न आये दुनिआ में तुम्हारी गिरिफ्त न हो लेकिन आख़िरत में तुम्हारी गिरिफ्त होगी और तेरे रब की पकड़ बहुत सख्त है फिर न कोई फरार का रास्ता होगा न कोई बहाना तस्लीम क्या जायेगा

" हदीस शरीफ"

सहल बिन सअद रज़ि अल्लाह अन्हु से मरवी है के हुज़ूर अलेह सलाम ने फ़रमाया "जो शख्स मेरे लिए उस चीज़ का ज़ामिन हो जाये जो उस के जबड़ों के दरमियान है (यानी ज़ुबान) और उस का जो दो टांगों के दरमियान में है (यानी शर्मगाह) तो मैं उसके लिए जन्नत का ज़ामिन हूँ" (यानी ज़ुबान और शर्मगाह को गलत इस्तेमाल से बचाने पर जन्नत का वादा है) (बुखारी)